



॥ आरती श्री सूर्य जी ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
त्रिभुवन – तिमिर – निकन्दन, भक्त-हृदय-चन्दन ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
सप्त-अश्वरथ राजित, एक चक्रधारी ।
दुःखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
सुर – मुनि – भूसुर – वन्दित, विमल विभवशाली ।
अघ-दल-दलन दिवाकर, दिव्य किरण माली ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
सकल – सुकर्म – प्रसविता, सविता शुभकारी ।
विश्व-विलोचन मोचन, भव-बन्धन भारी ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
कमल-समूह विकासक, नाशक त्रय तापा ।
सेवत साहज हरत अति मनसिज-संतापा ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
नेत्र-व्याधि हर सुरवर, भू-पीड़ा-हारी ।
वृष्टि विमोचन संतत, परहित व्रतधारी ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।
सूर्यदेव करुणाकर, अब करुणा कीजै ।
हर अज्ञान-मोह सब, तत्त्वज्ञान दीजै ॥

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति नन्दन ।

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

Bhakti Margdarshan

